8209837844

www.ugc-net.com

UGC NTA NET (हिन्दी साहित्य)

साहित्यशास्त्र (**साधारणीकरण**)

ईकाई-3 भाग-11

By Jyoti
(Hindi Educator)

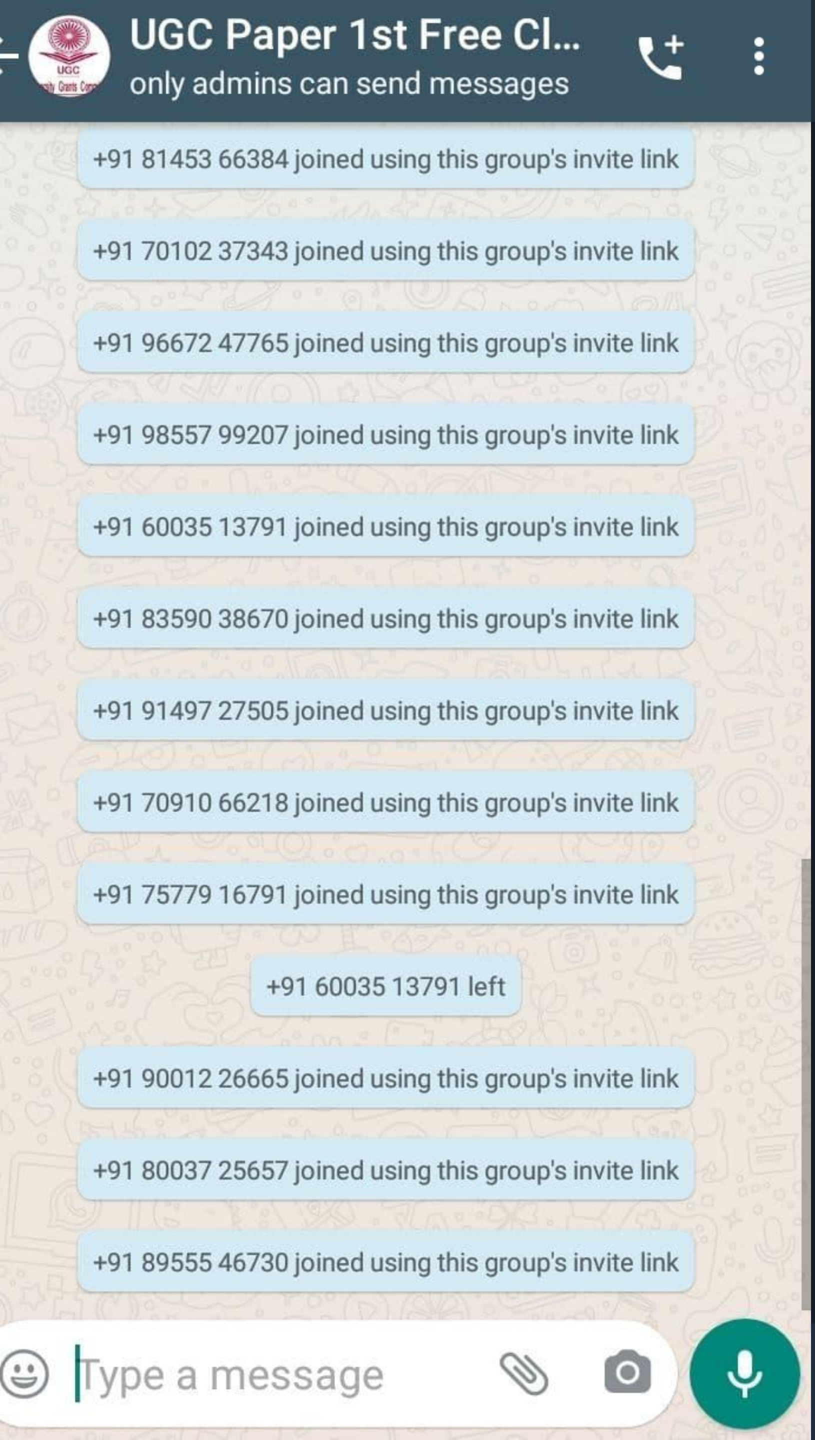
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast

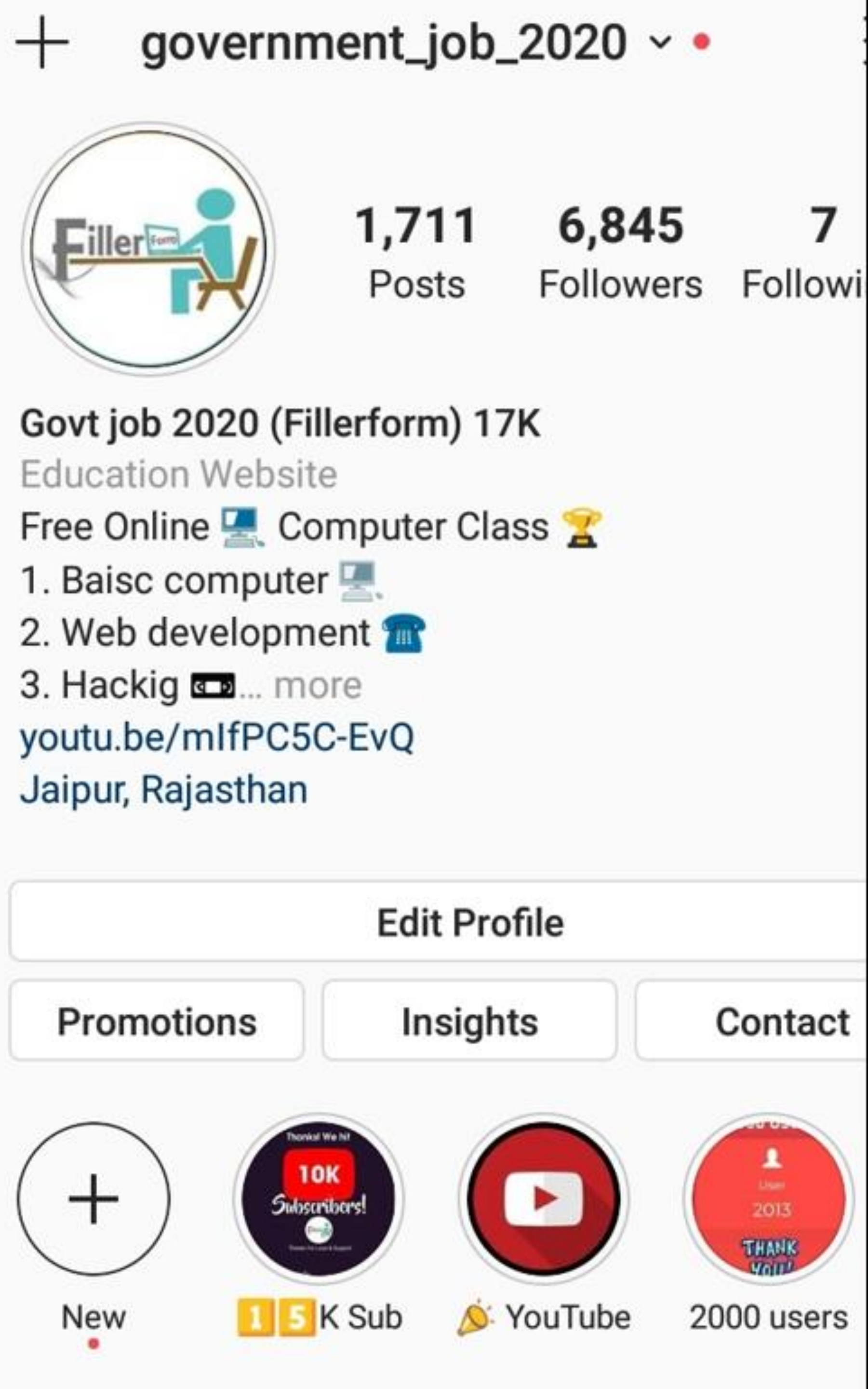
government_job_2020
1,711
Posts
6,845
Followers
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
15K Sub
YouTube
2000 users

UGC-NET 2022

09:00 AM
Current GK

11:00 AM
1st Paper

02:00 PM
1st Paper

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

09:00 PM
Management

January 10

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

UGC-NET 2022

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

04:00 PM
Political sciences

06:00 PM
Sanskrti

08:00 PM
Computer Sce.

09:00 PM
Management

JANUARY
17

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

5000+MCQ+PYQ

Free Books

100% OFF

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

हिन्दी सिलेबस

इकाई – III

साहित्यशास्त्र

काव्य के लक्षण, काव्य हेतु और काव्य प्रयोजन।
प्रमुख संप्रदाय और सिद्धान्त – रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य।
रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।
शब्दशक्ति, काव्यगुण, काव्य दोष
प्लेटो के काव्य सिद्धान्त।
अरस्तू : अनुकरण सिद्धान्त, त्रासदी विवेचन, विरेचन सिद्धान्त।
वड्र्सवर्थ का काव्यभाषा सिद्धान्त।
कॉलरिज : कल्पना और फैंटेसी।
टी.एस.इलिएट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, परम्परा की अवधारणा।
आई.ए.रिचड्र्स : मूल्य सिद्धान्त, संप्रेषण सिद्धान्त तथा काव्य-भाषा सिद्धान्त। रूसी रुपवाद।
नयी समीक्षा। मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब।

साधारणीकरण

8209837844

www.ugc-net.com

साधारणीकरण

साधारणीकरण रस-निष्पत्ति की वह स्थिति है जिसमें दर्शक या पाठक कोई अभिनय देखकर या काव्य पढ़कर उससे तादात्मय स्थापित करता हुआ उसका पूरा-पूरा रसास्वादन करता है।

विशेष—यह वही स्थिति है जिसमें दर्शक या पाठकों के मन में 'मैं' और 'पर' का भाव दूर हो जाता है और वह अभिनय या काव्य के पात्रों या भावों में विलीन होकर उनके साथ एकात्मता स्थापित कर लेता है।

साधारणीकरण : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

"साधारणीकरण वह सामान्यीकृत अनुभव है जिसमें वस्तुएँ स्थान तथा काल की उपाधि से मुक्त होकर निर्वैयक्तिक रूप में दिखाई देती हैं एवं अनुभूत होने लगती हैं |" इसी संदर्भ में डॉ नगेंद्र जी लिखते हैं —

"साधारणीकरण का अर्थ है – काव्य के पठन द्वारा पाठक या श्रोता का भाव सामान्य भूमि पर पहुँच जाना |"

साधारणीकरण का महत्त्व

अतः हम कह सकते हैं कि जब सहृदय अपनी पृथक सत्ता को भूलकर अपनी वैयक्तिक भावना का परित्याग करके समूची मानव जाति की सुख-दु:ख की अनुभूति में लीन हो जाता है तभी उसमें साधारणीकरण की स्थिति उत्पन्न होती है | सामान्य शब्दों में लोक-हृदय में लीन होना ही साधारणीकरण है |

संस्कृत विद्वानों के मत

साधारणीकरण के सम्बन्ध में संस्कृत विद्वानों के मत विशेष महत्त्वपूर्ण हैं |

(1) आचार्य भरत — आचार्य भरत ने यद्‌यपि 'साधारणीकरण' शब्द का प्रयोग तो नहीं किया लेकिन उन्होंने एक वाक्य में इस ओर संकेत अवश्य किया है –

"एभ्यश्च सामान्यगुणयोगेन रसा: निष्पद्‌यन्ते |"

अर्थात् जब इन भावों को सामान्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो रस की निष्पत्ति होती है |

(2) भट्टनायक — भरत के रससूत्र 'विभावानुभावव्यभिचारिसयोंगद्रसनिष्पत्ति:' के बारे में चार विद्वानों ने विचार किया है – भट्टलोल्लट, भट्टनायक, शंकुक तथा अभिनवगुप्त | भट्टलोल्लट और शंकुक ने यह प्रश्न उठाया कि
सहृदय कल्पित पात्रों के भावों से रसास्वादन कैसे करते हैं? भट्टनायक ने इसका समाधान करते हुए साधारणीकरण सिद्धांत की व्याख्या की | उनका कथन है कि सहृदय सर्वप्रथम अभिधा शक्ति द्वारा पात्रों के संवादों के अर्थ ग्रहण करता है | पुनः भावकत्व व्यापार द्वारा उस अर्थ का भावन करता है | भावकत्व द्वारा ही विभाव, अनुभाव और संचारी भावों का साधारणीकरण हो जाता है |

(3) अभिनवगुप्त — साधारणीकरण के स्वरूप पर प्रकाश डालने वाले तीसरे व्याख्याकार हैं – आचार्य अभिनवगुप्त | आचार्य अभिनवगुप्त के अनुसार काव्य या नाटक द्वारा प्रस्तुत वस्तु के संबंध में सहृदय या सामाजिक की व्यक्तिगत अनुभूति मित्र, शत्रु तथा उदासीन भाव से असंबद्ध अथवा मुक्त प्रतीत होती है | वस्तु की व्यक्तित्व से यह असंबद्धता ही वस्तु का साधारणीकरण है |

(4) **धनंजय** — अभिनवगुप्त के पश्चात धनंजय ने साधारणीकरण के सिद्धांत की व्याख्या की है | उन्होंने सर्वप्रथम 'कवि तत्त्व' का उल्लेख किया है | इस संदर्भ में धनंजय का विचार था कि नाटक देखने या काव्य पढ़ने से सहृदय के समक्ष राम, कृष्ण आदि ऐतिहासिक पात्र भी ऐतिहासिक पात्र नहीं रह जाते अपितु कवि निर्मित पात्र बन जाते हैं | राम और कृष्ण आदि पात्रों के प्रति पाठक या दर्शक का पूज्य भाव समाप्त हो जाता है और कवि निर्मित पात्रों के माध्यम से रस अनुभूति प्राप्त करता है |

(5) **आचार्य विश्वनाथ** — आचार्य विश्वनाथ ने अपनी रचना 'साहित्यदर्पण' में साधारणीकरण पर प्रकाश डाला | उन्होंने साधारणीकरण में विभाव, अनुभाव और संचारी भाव तीनों का उल्लेख किया है | वे कहते हैं –

'व्यापारोस्ति विभावादि नाम्ना साधारणी कृति: |'

अर्थात काव्य नाटक गत विभावादी तीनों का व्यापार साधारण रूप ग्रहण कर लेता है |

(6) **आचार्य जगन्नाथ** — आचार्य जगन्नाथ ने स्पष्ट रूप से 'साधारणीकरण' शब्द का प्रयोग नहीं किया लेकिन 'दोष-दर्शन' के आधार पर साधारणीकरण की व्याख्या करने की कोशिश अवश्य की | इस संदर्भ में वे कहते हैं कि भावना के दोष के कारण ही रामादि असाधारण पात्र सहृदय को सामान्य प्रतीत होने लगते हैं |

हिंदी के विद्वानों के मत

रीतिकालीन हिंदी के आचार्य कवियों ने साधारणीकरण के विषय में कुछ विशेष चिंतन नहीं किया |

(क) **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** — आचार्य शुक्ल 'साधारणीकरण' पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं –"जब तक किसी भाव का कोई विषय इस रूप में नहीं लाया जाता कि वह सामान्यतः सबके उसी भाव का आलंबन हो सके तब तक उसमें रसोदबोधन की पूर्ण शक्ति नहीं आती | इसी रूप में लाया जाना हमारे यहाँ साधारणीकरण कहलाता है |"उपर्युक्त पंक्तियों से यह स्पष्ट होता है कि शुक्ल जी आश्रय के आलंबन का ही साधारणीकरण मत मानते हैं |इसके साथ-साथ शुक्ल जी आश्रय के साथ तादात्मय, आलंबन का साधारणीकरण और शील-वैचित्र्य की स्थिति में मध्यम कोटि की रसानुभूति को भी स्वीकार करते हैं |

(ख) **आचार्य केशव प्रसाद मिश्र** आचार्य शुक्ल के मत का खंडन करते हुए साधारणीकरण का संबंध कवि या सहृदय की चित्तवृत्ति से स्वीकार करते हैं |

(ग) **डॉ श्यामसुंदर दास** पाठक के साधारणीकरण को मानते हुए लिखते हैं –"कवि के समान सहृदय भी जब मधुमती भूमिका का स्पर्श करता है तब उसकी वृत्तियां उसी प्रकार एक लय में हो जाती हैं | कवि और पाठक की चित्तवृत्तियों का एकतान, एकलय हो जाना ही साधारणीकरण है" |

(घ) **बाबू गुलाब राय** 'साधारणीकरण' में तीन तत्वों का उल्लेख करते हैं – कवि, पाठक और भाव | इन तीनों का साधारणीकरण होता है | उनके विचारानुसार कवि अपने वैयक्तिक भावों से ऊपर उठकर भावाभिव्यक्ति करता है, यह उसका साधारणीकरण है |

(ङ) **आचार्य नंददुलारे वाजपेयी** ने बाबू गुलाबराय के मत का समर्थन करते हुए कहा है कि दर्शक या पाठक का कवि की भावना तक पहुँचना ही साधारणीकरण है |

(च) **डॉ नगेंद्र** ने अपनी पुस्तक 'रस सिद्धांत' में कहा है – "साधारणीकरण न तो आश्रय (राम) का होता है, न आलंबन (सीता) का अपितु यह कवि की अनुभूति का होता है |"

8209837844 www.ugc-net.com

विभिन्न आचार्यों की दृष्टि में साधारणीकरण (सारांश)

आचार्य	साधारणीकरण
1. भट्टनायक –	विभावादि का
2. अभिनवगुप्त –	विभावादि के स्थायी भाव के साथ-साथ सामाजिक की अनुभूति का
3. पं॰ विश्वनाथ –	आलंबन, आश्रय और पाठक सभी का साधारणीकरण, आश्रय के साथ प्रमाता के तादात्म्य पर विशेष बल
4. पं॰ जगन्नाथ –	साधारणीकरण को भ्रमजनित कहते हुए इसके स्थान पर दोषदर्शन की स्थापना की।
5. केशव प्रसाद मिश्र –	सहृदय की चेतना का साधारणीकरण माना। इन्होंने साधारणीकरण का संबंध योग की मधुमती की भूमिका से जोड़ा।
6. श्यामसुंदर दास –	योग की मधुमती भूमिका से साधारणीकरण का संबंध
7. रामचंद्र शुक्ल –	आलंबन या आलंबन धर्म
8. गुलाबराय –	सभी का साधारणीकरण माना (नाटकीय प्रपंच, नाटककार प्रेक्षक)
9. डॉ॰ नगेंद्र –	कवि की अनुभूति का साधारणीकरण।

निष्कर्ष — इस प्रकार संस्कृत काव्यशास्त्रियों तथा आधुनिक हिंदी विद्वानों ने 'साधारणीकरण' के विषय में अपने-अपने मत व्यक्त किए हैं | उपर्युक्त सभी मतों पर विचार करने के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि साधारणीकरण के तीन प्रमुख तत्त्व हैं – कवि, सहृदय (पाठक / श्रोता या दर्शक) और कवि की भावाभिव्यक्ति | साधारणीकरण में यह तीनों तत्त्व समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं | यदि कवि प्रतिभा-संपन्न है और प्रभावशाली ढंग से भावाभिव्यक्ति करता है तो सहृदय उससे अवश्य प्रभावित होगा, उसका कवि के भाव के साथ तादात्म्य अवश्य स्थापित होगा | तादात्म्य स्थापित होने के पश्चात ही सहृदय साधारणीकरण की प्रक्रिया (Sadharanikaran Ki Prakriya) द्वारा रसानुभूति प्राप्त करेगा |

अतः साधारणीकरण रसानुभूति (साध्य) का साधन है | साधारणीकरण भारतीय काव्यशास्त्र की एक महत्वपूर्ण देन या उपलब्धि कही जा सकती है |

प्रश्न :- किसे 'व्यभिचारी भाव' कहा जाता है?

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com